



सहजन की खेती अपनायें और अधिक लाभ कमायें

त्रलोकी सिंह, ओम प्रकाश, पंकज नौटियाल, अंजली साहू एवं त्रलोक नाथ राय

भाकृअनुप कृषि विज्ञान केंद्र हरदोई, केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, संडीला

भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

ईमेल: prakash1964om@gmail.com

सहजन भारत में उगाई जाने वाली एक सब्जी की प्रमुख फसल है। इसको वैज्ञानिक भाषा में मोरिंगा ओलीफेरा के नाम से जाना जाता है। इसको विभिन्न राज्यों में अलग अलग नामों से जैसे हिंदी भाषी राज्यों में इसे सहजन, मराठी में रोवागा, तमिल में मुरुन्गाई, मलयालम में मुरिंगनगा तथा तेलगू में मुनगकाया आदि नामों से जाना जाता है।

मोरिंगा की खेती का व्यापक रूप से भारत में क्षेत्रफल बढ़ रहा है। इसका क्षेत्रफल गुजरात के कच्छ जिले में तेजी के साथ क्षेत्रफल बढ़ रहा है। यह जीनस मोरिंगा से है जो की मोरिंगेसी कुल का पौधा है। मोरिंगा एक छोटा एवं मध्यम ऊंचाई और एक वर्षीय एवं बहुवर्षीय पौधा है। इसकी ऊंचाई 10 से 12 मीटर वाला नाजुक तने वाला पौधा होता है। मोरिंगा की दो प्रकार की प्रजातियाँ होती हैं एक वर्षीय एवं बहुवर्षीय। इसकी खेती मुख्यतः दक्षिणी राज्यों में तमिलनाडु, केरला, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पूर्वी राज्य बिहार और पश्चिम बंगाल, पश्चिमी राज्य राजस्थान एवं गुजरात में की जाती है। तीव्र गति से वृद्धि एवं बढवार करने वाला पौधा है। इसका पौधा सूखा सहन करने वाला एवं विविध पारिस्थितिक तंत्र और विभिन्न फसल पद्धतियों में लगाने वाला होता है। मोरिंगा की 13 प्रजातियाँ भारत के हिमालय क्षेत्र में पाई जाती हैं। श्रीलंका, उत्तर पूर्वी और दक्षिण पश्चिम अफ्रीका, मेडागास्कर और अरब प्रान्त में पाई जाती हैं।

उपयोग एवं महत्व:

मोरिंगा का प्रत्येक भाग बहुत ही उपयोगी होता है। चाहे वो पत्तियाँ, फली छाल, जड़ एवं फूल आदि। यह मनुष्य एवं पशुओं दोनों के लिए बहुत उपयोगी होता है। इसका पौधा बहुउद्देशीय होता है। इसके पौधे

के भाग का खाद्य मूल्य होता है। इसकी पत्तियों का उपयोग हरा सलाद, सब्जी, दाल करी, पराठा, पकोड़ा, अंडा रोल, आलू भुर्जी, फली का उपयोग आचार, सूप, दाल करी, आदि में उपयोग किया जाता है। इसका भारतीय सब्जी उद्योग में अद्वितीय और सुसंगत स्थान है। इसकी पत्तियों का उपयोग पशुओं के लिए हरे चारे के लिए भी कर सकते हैं। पशु इसको सूखे चारे एवं अकेले बड़े चाव से खाते हैं। इसका उपयोग सब्जी बनाने के अलावा दवाईयां एवं बीज से निकले तेल का उपयोग इत्र में होता है। इसकी सूखी एवं हरी पत्तियों का उपयोग का खाद बनाने में भी करते हैं। यह विटामिन A एवं C से भरपूर तथा लोह एवं कैल्शियम तत्व भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके उपयोग से त्वचा स्वस्थ ही नहीं वल्कि चिकनी रखने के साथ साथ ठण्ड के प्रतिरोधक क्षमता एवं संक्रमण से बचाती है। इसकी पत्तियों में संतरा से 7 गुना अधिक विटामिन C, दूध से 4 गुना अधिक कैल्शियम, गाजर से 4 गुना अधिक विटामिन A, केले से 3 गुना अधिक पोटेशियम एवं दूध से 2 गुना अधिक प्रोटीन पाया जाता है। मोरिंगा को पोषक मूल्य का पाँवर हाउस भी कहा जाता है।

मोरिंगा का पोषक मूल्य:

तालिका 1. पत्तियों और फलों का संगठन (प्रति 100 ग्राम खाद्य)

क्रम स.	पोषक तत्व	पत्तियों में	फलियों में
1.	खाद्य योग्य भाग (%)	75	83
2.	नमी (%)	75.0	86.9
3.	प्रोटीन (ग्राम)	6.7	2.5
4.	वसा (ग्राम)	1.7	0.1
5.	कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	13.4	3.7

6.	खनिज पदार्थ (ग्राम)	2.3	2.0
7.	रेशा (ग्राम)	0.9	4.8
8.	केलोरी	92	26
9.	कैल्सियम (मि.ग्रा.)	440	30
10.	मैगनीशियम (मि.ग्रा.)	24	24
11.	ऑक्सालिक एसिड (मि.ग्रा.)	101	101
12.	फास्फोरस (मि.ग्रा.)	70	110
13.	पोटेशियम (मि.ग्रा.)	259	250
14.	कोपर (मि.ग्रा./ग्रा.)	1.1	3.1
15.	लोह (मि.ग्रा.)	7.0	5.3
16.	गंधक (मि.ग्रा.)	137	137
17.	विटामिन A (आ.यू)	11,300	184
18.	क्लोरोरिन (मि.ग्रा.)	423	423
19.	थायमिन (मि.ग्रा.)	0.06	0.05
20.	रिबोफ्लोविन (मि.ग्रा.)	0.05	0.07
21.	निकोटिनिक एसिड (मि.ग्रा.)	0.8	0.2
22.	विटामिन C (मि.ग्रा.)	220	120

मृदा एवं जलवायु:

इसकी खेती वैसे तो सभी प्रकार की मृदा में की जा सकती है। इसकी खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली चिकनी दोमट से लेकर बलुई दोमट मृदा में इसकी खेती करते हैं। इसकी खेती जलमग्न मृदा में नहीं की जा सकती है। इसकी खेती के लिए 6.5 से 8.5 पी.एच. मान वाली मृदा अच्छी हैं। इसकी वृद्धि एवं विकास के लिए गर्म एवं अद्रतायुक्त जलवायु तथा अच्छे एवं विकसित फूल के लिए शुष्क जलवायु अच्छी होती है। इसमें 25 से 30 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान फूल विकास के लिए अच्छा है।

कृषि क्रियाएं:

1. प्रसारण एवं लगाने की विधियाँ:

इसकी प्रसारण की दो विधियाँ हैं 1. सीधे खेत में बीज की बुवाई करना 2. नर्सरी में पौध तैयार द्वारा खेत में रोपाई करना। मोरिंगा की दो प्रकार की किस्म पाई जाती हैं एक वर्षीय एवं

बहुवर्षीय। वार्षिक मोरिंगा को सीधे खेत में गड्डों में बीज की बुवाई कर सकते हैं और बहुवर्षीय किस्म को नर्सरी में पौध तैयार करके लगाया जा सकता है।

(अ) सीधे खेत में बीज द्वारा बुवाई:

सीधे खेत में बुवाई के लिए 6x7 मीटर आकार का कूड बनायें फिर उसमें 1x1x1 मीटर आकार का गड्डा बनायें। गड्डों को 10 से 15 किग्रा गोबर की खाद या कम्पोस्ट से मई-जून के महीने में भर दें या खेत की तैयारी करते समय अंतिम जुताई के समय 20 टन गोबर की खाद या कम्पोस्ट भूमि में मिलाएं। सीधे खेत में बुवाई के लिए डिबलर की सहायता से 2-3 बीज प्रति गड्डे में 5-6 सेमी की गहराई पर डालें। इसमें पौधे से पौधे की दूरी 2.0 मीटर और लाइन से लाइन की दूरी 2.5 मीटर रखते हैं। सीधे खेत में बुवाई के लिए प्रति हेक्टेयर 600-650 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। इस विधि से बुवाई करने से 10 से 12 दिन में बीज का अंकुरण हो जाता है।

(ब) नर्सरी में पौध तैयार करना:-

नर्सरी में पौध तैयार करने के लिए बालू, गोबर की खाद और बाग की मिटटी की आवश्यकता होती है। उपरोक्त सामग्री को 6 इंच उठी नर्सरी पर अच्छी तरह मिलाकर 1 -1.5 इंच की गहराई पर बीज डाल दें और रोज शाम को हजारों या स्प्रींकलर से बीज अंकुरण तक सिचाई करते रहें। बीज अंकुरण के बाद 3 दिन बाद सिचाई करें। यदि आप पोलीबेग में पौध तैयार करना चाहते हैं तब पोलीबेग (15 सेमी x 10 सेमी आकार की) की आवश्यकता पड़ेगी। पोलीबेग को 2 भाग मृदा, 1 भाग बालू, 1 भाग गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद से भर दें, उसके बाद 2 सेमी की गहराई पर 3-4 बीज पोलीबेग में डाल दें और हजारों या स्प्रींकलर से शाम की समय रोज हल्की सिचाई करते रहें। वैसे इस विधि से पौध तैयार करने से 5 से 10





दिन में बीज का अंकुरण हो जाता है। बीज का अंकुरण बीज की आयु एवं पूर्व उपचार पर निर्भर करता है। नर्सरी में पौध तैयार करने के लिए 650-750 ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। बीज के अंकुरण के 10-15 दिन बाद थिनिंग कर देना चाहिए प्रत्येक पोलीबैग में 1-2 पौधा ही रखना चाहिए। जब पौधे 40-50 सेमी ऊंचाई के हो जाएँ तब खेत में रोपाई कर देना चाहिए। पौधों को खेत में 45x45x45 सेमी आकार के बने गड्डों 2.5 x 2.5 मीटर की दूरी पर रोपाई कर देना चाहिए। खेत में रोपाई जुलाई से अगस्त के महीने में करना उचित रहता है।

2. प्रमुख प्रजातियाँ:

मोरिंगा की प्रमुख उन्नत प्रजातियाँ PKM-1, PKM-2, KM-1, Rohit-1, Coimbatore-1 और Bhagya (KDM-1)।

i) PKM-1 वार्षिक मोरिंगा:

इसके फल मांसल और स्वादिष्ट होते हैं। यह बुवाई के 5-6 महीने में फूल आना शुरू हो जाते हैं और 7-8 महीने में फलियाँ तुड़ाई योग्य हो जाती हैं। यदि उचित प्रबंधन हो तब पौधे एक वर्ष में 4-6 मीटर ऊंचाई तक हो जाते और 6-12 प्राथमिक शाखाएँ निकल आती हैं। इसमें छोटे पत्तों से लगभग 40 सेमी लंबी पत्तियाँ होती हैं जो ऊपरी तरफ गहरे हरे रंग की होती हैं। इस प्रजाति में लगभग 25-150 फूल प्रति क्लस्टर के समूह में होते हैं। जिससे एक फली आमतौर पर विकसित होते हैं। इसमें शायद ही कभी 2-4 प्रति क्लस्टर फली विकसित होती है। इसकी फली 6.3 सेमी व्यास के साथ 75 सेमी लंबी तक होती है और 70% मांसल के साथ 150 ग्राम बजन होता है। इससे औसतन उपज 220 फली प्रति पौधा तक होती है और अनुमानत उपज लगभग 50-60 टन प्रति हेक्टेयर हैं फली फूलने के बाद 65 दिन बाद खाने योग्य हो

जाती हैं। पत्तियों को पोषक हरे रंग के रूप में इस्तेमाल में किया जाता है।

रैट्रनिंग से फसल के रूप में 3-4 वर्ष तक बनाये रखा जाता है। प्रत्येक वर्ष के बाद पौधों को जमीनी स्तर से 1 मीटर नीचे या ऊपर से काटना चाहिए।

ii) PKM-2 वार्षिक मोरिंगा:

यह प्रजाति MP-31(एम्पोथम बेडस लोकल) और MP-28 (अरसरडी लोकल) के बीच क्रॉस करके हाइब्रिड बनाई गई है। यह किस्म बीजों द्वारा सीधे खेत में लगाने के लिए उपयुक्त हैं। यह पौध रोपाई के छः महीने बाद फल देने लगती हैं और अन्तवर्ती फसल पद्धति के लिए भी बहुत ही उपयुक्त प्रजाति हैं। इसकी फली लगभग 126 सेमी लंबी होती है और फली का व्यास 8.3 सेमी होता है। इसमें 70 प्रतिशत मांसल के साथ साथ फली का वजन 280 ग्राम तक होता है। फली कम बीज वाली एवं स्वादिष्ट होती है प्रति पौधा फली की औसत संख्या 220 फली प्रति पौधा प्रति वर्ष तक होती हैं। इसकी पैदावार 98 टन प्रति हेक्टेयर तक होती है। रैट्रनिंग फसल के रूप में इसे 3 वर्ष तक ले सकते हैं। यह अच्छे जल निकास वाली रेतीली दोमट से लेकर दोमट मिट्टी तक विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है।

iii) KM-1 वार्षिक मोरिंगा:

यह एक वर्षीय सहजन है जिसे प्योर लाइन चयन द्वारा विकसित किया गया है इसको बीजों द्वारा प्रसारण किया जाता है। यह 400-500 फली प्रति पौधा प्रति वर्ष तक देती है। इसकी फली 25-30 सेमी तक लंबी होती है। इसकी कटाई आसानी से की जा सकती है। क्योंकि पौधे झाड़ियों की तरह होते हैं। पहली कटाई के बाद पौधों को जमीन से 1 मीटर ऊपर छोड़कर काट देने से रैट्रनिंग फसल ले सकते हैं।

रैटूनिंग के रूप में 2-3 वर्ष तक ले सकते हैं।

iv) **धनराज:**

यह एक वार्षिक सहजन है जो बीजों द्वारा प्रसारित किया जाता है। इसको आरसी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, अमेरिका में विकसित किया गया था।

v) **कोइम्बटूर-1:**

इस प्रजाति की फली की लम्बाई 25 से 35 सेमी होती है। इसकी फली गहरी हरी एवं स्वादिष्ट होती है। इसके प्रति पौधे से उपज 250 से 375 फली तक प्राप्त होती है। पौधा को रैटूनिंग के लिए छोड़ दिया जाय तो यह 3 से 4 वर्ष तक उपज देती है।

vi) **रोहित:**

इससे प्रथम बार उपज बुवाई के 4 से 6 माह में उपज देने लगती है। यह व्यसायक उपज 10 वर्ष तक देती है। प्रति वर्ष में 2 बार उपज प्राप्त कर सकते हैं। इसकी फली गहरी हरे रंग की 45 से 60 सेमी लम्बी मांसल, मुलायम, स्वादिष्ट एवं अच्छे गुणवक्ता वाली होती है। इसके एक पौधे से लगभग 40-125 फली और 3 से 10 किग्रा./वर्ष तक उपज देती है। इसकी पैदावार और गुणवक्ता मृदा प्रकार, जलवायु सिंचाई का प्रबंधन और पौध अंतरण और बाजार भाव पर निर्भर करती है।

3. **अंतरवर्ती सस्य क्रियाएँ और खाद एवं उर्वरक:**

जब पौधे 70 सेमी से 75 सेमी ऊंचाई के हो जाएँ तब पौधों से अनावश्यक किल्लों को एवं शाखाओं को निकाल देना चाहिए। इसके बाद रोपाई के 3 महीने बाद 100 ग्राम यूरिया, 100 ग्राम सुपर फॉस्फेट और 50 ग्राम पोटैश की मात्रा प्रति पौधा डालने के बाद सिंचाई कर देना चाहिए और दूसरी मात्रा 6 महीने के बाद 100 ग्राम यूरिया टॉप ड्रेसिंग के रूप में डालना चाहिए।

4. **जल प्रबंधन:**

सहजन का पौधा काफी नाजुक एवं मुलायम

होता है। इसको अधिक मात्रा में सिंचाई देने की आवश्यकता नहीं होती है। शुष्क क्षेत्रों में प्रथम दो महीने तक सिंचाई की लगातार आवश्यकता होती है और उसके बाद आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई करते हैं। जल की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता होने पर 15 दिन में दो बार सिंचाई करने पर फलियाँ जल्दी प्राप्त होने लगती हैं जहाँ एक समान वर्षा वाले क्षेत्रों में यह उपज लगातार प्राप्त होती है। इस फसल को शुष्क मौसम में 15 दिन में एक बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। जब इसकी खेती एक व्यवसाय रूप से करना चाहते हैं तब इसमें सिंचाई के लिए ड्रिप सिंचाई उचित रहती है। गर्मियों के मौसम में 12-16 लीटर पानी प्रति दिन प्रति पौधा दिया जाता है और सर्दियों में यह मात्रा इसकी आधी रह जाती है। यदि पर्याप्त मात्रा में सिंचाई उपलब्ध नहीं है तब जीवन पर्यन्त सिंचाई का प्रयोग 15 दिन में शुष्क अवस्था में दे सकते हैं।

5. **कटाई छँटाई:**

शाखाओं को बढ़ावा देने, पैदावार बढ़ाने और कटाई की सुविधा के लिए सहजन की छँटाई की जानी चाहिए। अगर छोड़ दिया जाए मुख्य तने को काटे बिना उगाएँ, तेजी से बढ़ने वाला पेड़ सीधा और लंबा उत्पादन देगा पत्तियाँ और फलियाँ केवल प्राथमिक तने पर आते हैं। अनेक शाखाओं एवं फलियों के विकास को प्रोत्साहित करना जमीन से आसान पहुँच के भीतर, शीर्ष पर बढ़ते अंकुर (ऊपर से 10 सेमी) की छँटाई करें पेड़ 0.6 से 1 मीटर ऊँचा होता है। आमतौर पर रोपण के 3 से 5 महीने बाद, तेज़ काटने वाले चाकू का प्रयोग करें। जहाँ काटा गया है उसके ठीक नीचे से नए अंकुर निकलेंगे। कुछ महीनों के बाद और नियमित रूप से, शाखाओं की बढ़ती हुई नोकों को काटें ताकि पेड़ की लंबाई बढ़े। छँटाई की एक अन्य रणनीति यह है कि जब प्रत्येक शाखा की लंबाई 60 सेमी हो





जाए तो उसे 30 सेमी तक काट दिया जाए। यह बहु-शाखाओं वाली झाड़ी उत्पन्न होगी। पुराने पेड़ जो अनुत्पादक हैं या आसान कटाई के लिए बहुत ऊँचे हैं जमीनी स्तर पर छंटाई की जा सकती है। किसानों को प्रति वर्ष कम से कम 2 छंटाई करनी चाहिए।

6. मोरिंगा के रोग और प्रबंधन:

भूरी पत्ती का धब्बा: रोग के नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम, डिफोलटन, मैकोजेब, मानेब, जिनेब, मेटिरम का पतियों पर छिड़काव प्रभावी हैं।

अल्टरनेरिया पत्ती का धब्बा: रोग की शुरुआत का पता लगाना कठिन है। एक बार धब्बे दिखाई देने के बाद उपचार करने में अक्सर बहुत देर हो जाती है और पतियों का गिरना अपरिहार्य हो जाता है। खरपतवारों को निकाल देना चाहिए जो अक्सर बीमारियों का कारण बनते हैं। कवकीय संक्रमणों हमलों के लक्षणों के लिए पतियों और नई टहनियों का निरीक्षण किया जाना चाहिए। रोग को नियंत्रित करने के लिए नीम के बीज के अर्क का पौधों पर छिड़काव किया जाता है। पत्ती धब्बों के नियंत्रण के लिए मैकोजेब, मानेब, जिनेब, मेटिरम जैसे फफूंदनाशकों का छिड़काव प्रभावी हैं।

पाउडरी मिल्ड्यू: वेटेबल सल्फर 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करने से बेहतर नियंत्रण होता है।

जड़ सड़ना: पेड़ों को जोरदार वृद्धि वाली स्थिति में रखा जाना चाहिए। टूटे हुए हिस्सों को ठीक से काटा जाना चाहिए और छाल में घाव किया जाना चाहिए, विशेषकर अंगों पर और कांटों को खुरच कर बोर्डो मिश्रण से संरक्षित किया जाना चाहिए। कार्बेन्डाजिम या थायोफेनेट मिथाइल या क्लोरोथालोनिल का छिड़काव प्रभावी नियंत्रण देता है।

फ्यूजेरियम विल्ट: बीज को रोग एवं सूत्रकृमि मुक्त मिट्टी में बोना चाहिए। कार्बेन्डाजिम 2

ग्राम/किग्रा से बीज उपचार करने से रोग का प्रकोप कम होता है। संक्रमित पौधों को निकालकर नष्ट कर देना चाहिए। गैर-मेज़बान फसलों के साथ लंबे फसल चक्र से इनोकुलम की कमी में मदद मिलती है। ऑयल ड्रिच के रूप में कार्बेन्डाजिम, बेनोमाइल के प्रयोग से मुरझाने की घटनाओं में कमी आई है।

फलों का सड़ना: क्लोरोथालोनिल, आईप्रोडियोन का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

7. मोरिंगा के प्रमुख कीट एवं प्रबंधन:

बड मिज़: प्यूपा को बाहर निकालने और मारने के लिए पेड़ों के चारों ओर जुताई करें। इन लट सहित क्षतिग्रस्त कलियों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। एक लाइट ट्रेप प्रति/हेक्टेयर की दर से लगाएं। कीटनाशक जैसे कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी 1 ग्राम प्रति लीटर या मैलाथियान 50 ईसी 2 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

पत्ती काटने वाला कीट: प्रकाश जाल 1/हेक्टेयर की दर से स्थापित करें खेत में सहजन की फसल की ऊंचाई से ऊपर पक्षियों के बैठने की व्यवस्था का प्रावधान करें ताकि पक्षी वहां जाकर उनका शिकार कर सकें। मकड़ियाँ नये फलश पर बड़ी संख्या में निवास करती हुई पाई जाती हैं जो बढ़ती हुई कीट पर प्राकृतिक नियंत्रण रखती हैं। कीटनाशक जैसे कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी 1 ग्राम प्रति लीटर या मैलाथियान 50 ईसी 2 मिली प्रति लीटर पानी या फेनथियान (0.05%) का छिड़काव करें।

बालों वाली लट: अंडे के समूह और लट को इकट्ठा करें और नष्ट करें बारिश के तुरंत बाद वयस्कों को आकर्षित करने और मारने के लिए प्रति हेक्टेयर की दर से प्रकाश जाल लगाएं। तने पर एकत्रित सूंडी को मारने के लिए जलती हुई मशाल का प्रयोग करें। स्प्रे फॉर्स @ 25 ग्राम/लीटर या कार्बेरिल 50 डब्ल्यूपी @ 2 ग्राम/लीटर का उपयोग किया जाता है।

तना छेदक: सभी जालदार सामग्री और मल को साफ करें। छिद्रों को क्लोरोफॉर्म, फॉर्मलिन या पेट्रोल जैसे फ्यूमिगेंट्स में भिगोए रूई से बंद करें और मिट्टी से सील करें।

8. उपज:

विकास के आधार पर, रोपण के 6 से 12 महीने बाद तक पत्तियों की कटाई की जाती है। पेड़, छंटाई का प्रकार और पानी दिए गए पेड़ों की कटाई करते हैं। पहले शाखाओं से पत्तियों के तने तोड़कर पत्तियां तोड़ें। युवा शूट टिप्स की कटाई करने से पार्श्वशाखाओं के विकास को बढ़ावा मिलेगा। आगामी फसल से पहले नए अंकुर और शाखाएँ विकसित होने देवे। बीच से काटी गई शाखाओं की पत्तियाँ सिरे पर स्थित शाखाओं की पत्तियों की तुलना में कम कड़वी

और नरम होती हैं। यदि पौधों को कम दूरी और उच्च घनत्व पर उगाया जाता है, तो पौधों को जमीन से लगभग 10-20 सेमी ऊपर से काटें। पुरानी पत्तियों को उनके सख्त और कांटेदार तनों से अलग करना चाहिए। सूखे पत्तों का पाउडर बनाने के लिए ये पत्तियाँ अधिक उपयुक्त होती हैं, क्योंकि छानने की प्रक्रिया के दौरान तने को हटाया जा सकता है। ताजी सब्जियों के लिए, कटी हुई पत्तियों को बंडलों में बांधें और उन्हें बनाए रखने के लिए छाया में रखें। जब फलियाँ छोटी और कोमल हों तब उनकी कटाई करें तथा इन्हें हरी फलियों के रूप में खाया जाता है। चाय बनाने के लिए ताजे या सूखे फूलों का उपयोग किया जाता है।

हिंदी को आप हिन्दी कहें या हिन्दुस्तानी
मेरे लिए तो दोनो एक ही हैं।
हमारा कर्तव्य यह है कि हम अपना
राष्ट्रीय कार्य हिन्दी भाषा में करें।

- महात्मा गाँधी

